ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | JULY - 2021

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

"वीरांगना गोंडवंश की महारानी दुर्गावती की वीरगाथा (ऐतिहासिक वर्णन)

डॉ. सुनीता पन्दो
एम.ए. हिन्दी साहित्य, एम.ए. समाजशास्त्र ,
(Net Qualified U.G.C.)

रानी दुर्गावती की जीवनी और इतिहास (Rani Durgavati Jivani) :–

रानी दुर्गावती का नाम भारत की उन महानतम वीरांगनाओं की सबसे अग्रिम पंक्ति में आता है, जिन्होंने मात्रभूमि और अपने आत्मसम्मान की रक्षा हेतु प्राणों का बलिदान दिया। रानी दुर्गावती कांलिजर के राजा कीरत सिंह की पुत्री और गोंड राजा दलपत शाह की पत्नी थीं। इनका राज्य क्षेत्र दूर–दूर तक फैला था। रानी दुर्गावती बहुत ही कुशल शासिका थीं इनके शासन काल में प्रजा बहुत सुखी थी और राज्य की ख्याति दूर–दूर तक फैल चुकी थी। इनके राज्य पर ना केवल अकबर मालवा के शासक बाजबहादुर की भी नजर थी। रानी ने अपने जीवन काल में कई युद्ध लड़े और उनमें विजय भी पाई।

रानी दुर्गावती का जन्म और बचपन (Rani Durgavati Birth and Childhood) –

रानी दुर्गावती का जन्म चंदेल राजा कीरत राय (कीर्तिसिंह चंदेल) के परिवार में कालिंजर के किला में 5 अक्टूबर 1524 में हुआ था। राजा कीरत राय की पुत्री का जन्म दुर्गा अष्टमी के दिन होने के कारण उसका नाम दुर्गावती रखा गया। वर्तमान में कालिंजर उत्तरप्रदेश के बाँदा जिले में आता है। इनके पिता राजा कीरत राय का नाम बड़े ही सम्मान से लिया जाता था इनका सम्बन्ध उस चंदेल राज वंश से था राजा विद्याधर ने महमूद गजनबी को युद्ध में खदेड़ा था और विश्व प्रसिद्ध खजुराहो के कंदारिया महादेव मंदिर का निर्माण करवाया। कन्या दुर्गावती का बचपन उस माहोल में बीता जिस राजवंश ने अपने मान सम्मान के लिये कई लडाइयां लड़ी। कन्या दुर्गावती ने इसी कारण बचपन से ही अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा भी प्राप्त एवं कुशल प्रशासिका बनी।

रानी दुर्गावती का विवाह और ससुराल (Rani Durgavati's marriage and in laws) –

कन्या दुर्गावती जब विवाह योग्य हुई तब 1542 में उनका विवाह गोंड राजा संग्राम शाह के पुत्र दलपत शाह क साथ संपन्न हुआ। दोनों पक्षों की जाती अलग–अलग थीं। राजा संग्राम शाह का राज्य बहुत ही विशाल था उनके राज्य में 52 गढ़ थे और उनका राज्य वर्तमान मंडला, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, भोपाल, सागर, दमोह और वर्तमान छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों तक फैला था। गोंड राजवंश और राजपूतों के इस मेल से शेरशाह सूरी को करारा झटका लगा। शेरशाह सूरी ने 1545 को कालिंजर पर हमला कर दिया और बड़ी मुश्किल से कांलिंजर के किले को जीतने में सफल भी हो गया परन्तु अचानक हुए बारूद के विस्फोट से वह मारा गया। 1545 में रानी दुर्गावती ने एक पुत्र को जन्म दिया। पुत्र का नाम वीरनारायण रखा गया। 1550 में राजा दलपत शाह की मृत्यु हो गई। इस दुःख भरी घड़ी में रानी को अपने नाबालिग पुत्र वीर नारायण को राजगददी पर बैठा कर स्वयं राजकाज की बागडोर संभालनी पड़ी।

रानी दुर्गावती और उनका राज्य (Rani Durgavati and her kindom) –

रानी दुर्गावती की राजधानी सिंगोरगढ़ थी। वर्तमान में जबलपुर–दमोह मार्ग पर स्थित ग्राम सिंग्रामपुर में रानी दुर्गावती की प्रतिमा से छः किलोमीटर दूर स्थित सिंगोरगढ़ का किला बना हुआ है। सिंगोरगढ के अतिरिक्त मदन महल का किला और नरसिंहपुर को चौरागढ़ का किला रानी दुर्गावती के राज्य के प्रमुख गढ़ों में से एक थे। रानी का राज्य वर्तमान के जबलपुर, नरसिंहपुर, दमोह, मंडा, होशंगाबाद, छिंदवाडा और छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों तक फैला था रानी के शासन का मुख्य केंद्र वर्तमान जबलपुर और उसके आस–पास का क्षेत्र था। अपने दो मुख्य सलाहकारों और सेनापतियों आधार सिंह कायस्थ और मानसिंह ठाकुर की सहायता से राज्य को सफलतापूर्वक चला रही थीं। रानी दुर्गावती ने 1550 से 1564 ईसवीं तक सफलतापूर्वक शासन किया। रानी दुर्गावती के शासन काल में प्रजा बहुत सुखी थी और उनका राज्य भी लगातार प्रगति कर रहा था। रानी दुर्गावती के शासन काल में उनके राज्य की ख्याति दूर–दूर तक फैल गई। रानी दुर्गावती ने अपने शासन काल में कई मंदिर, इमारते और तालाब बनवाये। इनमें सबसे प्रमुख हैं जबलपुर का रानी ताल जो रानी दुर्गावती ने अपने नाम पर बनवाया, उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरिताल और दीवान आधार सिंह के नाम पर आधार ताल बनवाया। रानी दुर्गावती ने अपने शासन काल में जाँत–पाँत से दूर रहकर सभी को समान अधिकार दिए उनके शासन काल में गोंड, राजपूत और कई मुस्लिम सेनापति भी मुख्य पदों पर असीन थे। रानी दुर्गावती ने वल्लभ साम्प्रदाय के स्वामी विठठलनाथ का स्वागत किया। रानी दुर्गावती को उनकी कई विशेषताओं के कारण जाना जाता है वे बहुत सुन्दर होने के साथ–साथ बहादुर और योग्य शासिका भी थीं। उन्होंने दुनिया को यह बताया की दुश्मन की आगे शीश झुकाकर अपमान जनक जीवन जीने से अच्छा मृत्यु को वरन करना है। महारानी दुर्गावती शक्तिशाली मात्रशक्ति इक ओजस्वी स्वाला थी मैं खुद अकेली "समाधि" पर गई थी दर्शन करने प्रथमबार 2017 में मुझे अदभुत ज्वाला महसूस हुआ अपनी अश्रुओं की बून्दों से माँ को तिलक लगाया– "ऐसी शक्तिशाली महारानी जो सदैव सदैव गोण्डवँश में जीवित एवं अमर रहेगी।"

रानी दुर्गावती और बाज बहादुर की लड़ाई (Rani Durgavati and Baz Bahadur Battle) –

शेर शाह सूरी के कालिंजर के दुर्ग में मरने के बाद मालवा पर सुजात खान का अधिकार हो गया जिसे उसके बेटे बाजबहादुर ने सफलतापूर्वक आगे बढाया। गोंडवाना राज्य की सीमा मालवा को छूती थीं और रानी के राज्य की ख्याति दूर–दूर तक फैल चुकी थी। मालवा के शासक बाजबहादुर ने रानी को महिला समझकर कमजोर समझा और गोंडवाना पर आक्रमण करने की योजना बनाई। बाजबहादुर इतिहास में रानी रूपमती के प्रेम के लिये जाना जाता है। 1556 में बाजबहादुर ने रानी दुर्गावती पर हमला कर दिया। रानी की सेना बड़ी बहादुरी के साथ लड़ी और बाजबहादुर को युद्ध में हार का सामना करना पड़ा और रानी दुर्गावती की सेना की जीत हुई। युद्ध में बाजबहादुर की सेना को बहुत नुकसान हुआ। इस विजय के बाद रानी का नाम और प्रसिद्धी और अधिक बढ़ गई।

रानी दुर्गावती और अकबर की लडाई (Rani Durgavati and Akbar's Battle) –

1562 ईसवी में अकबर ने मालवा पर आक्रमण कर मालवा के सुल्तान बाजबहादुर को परास्त कर मालवा पर अधिकार कर लिया। अब मुगल साम्राज्य की सीमा रानी दुर्गावती के राज्य की सीमाओं को छूने लगी थीं। वहीं दूसरी तरफ अकबर के आदेश पर उसके सेनापति अब्दुल माजिद खान ने रीवा राज्य पर भी अधिकार कर लिया। अकबर अपने साम्राज्य को और अधिक बढ़ाना चाहता था। इसी कारण वह गोंडवाना साम्राज्य को हड़पने की योजना बनाने लगा। उसने रानी दुर्गावती को सन्देश भिजवाया कि वह अपने प्रिय सफेद हांथी सरमन और सूबेदार आधार सिंह को मुगल दरबार में भेज दे। रानी अकबर के मसूंबों से भली भांति परिचित थी उसने अकबर की बात मानने से सक्त इंकार कर दिया और अपनी सेना को युद्ध की तैयारी करने का आदेश दिया। इधर अकबर ने अपने सेनापति आसफ खान को गोंडवाना पर आक्रमण करने का आदेश दे दिया। आसफ खान एक विशाल सेना लेकर रानी पर आक्रमण करने के लिये आगे बढ़ा। रानी दुर्गावती जानती थीं की उनकी सेना अकबर की सेना के आगे बहुत छोटी है। युद्ध में एक और जहाँ मुगलों की विशाल सेना आधुनिक अस्त्र–शस्त्र से प्रशिक्षित सेना थी वहीं रानी दुर्गावती की सेना छोटी और पुराने परंपरागत हथियार से तैयार थी। उन्होंने अपनी सेना को नरई नाला घाटी की तरफ कूच करने का आदेश दिया। रानी दुर्गावती के लिये नरई युद्ध हेतु सुविधाजनक स्थान नरई के चारो तरफघने जंगलों से घिरी पहाडियाँ थीं। मुगल सेना के लिये यह क्षेत्र

युद्ध हेतु कठिन था। सेना के फौजदार अर्जुन सिंह मारे गये अब रानी ने स्वयं ही पुरूष वेश धारण कर युद्ध का नेतृत्व किया दोनों तरफ से सेनाओं को काफी नुकसान हुआ। शाम होते होते रानी की सेना ने मुगल सेना को घाटी से खदेड़ दिया और इस दिन की लड़ाई में रानी दुर्गावती की विजय हुई। रानी रात में ही दुबारा मुगल सेना पर हमला उसे भारी नुकसान पहुँचाना चाहता थीं परन्तु उनके सलाहकारों ने उन्हें ऐसा नहीं करने की सलाह दी।

रानी दुर्गावती का बलिदान (Rani Durgavati Sacrifice) –

अपनी हार से तिलमिलाई मुगल सेना के सेनापति आसफ खान ने दूसरे दिन विशाल सेना एकत्र की और बड़ी–बड़ी तोपों के साथ दुबारा रानी पर हमला बोल दिया। रानी दुर्गावती भी अपने प्रिय सफेद हांथी सरमन पर सवार होकर युद्ध मैदान में उतरीं। रानी के साथ राजकुमार वीरनारायण भी थे रानी की सेना ने कई बार मुगल सेना को पीछे धकेला। कुंवर वीरनारायण के घायल हो जाने से रानी ने उन्हें युद्ध से बाहर सुरक्षित जगह भिजवा दिया। युद्ध के मैदान एक तीर रानी दुर्गावती के कान के पास लगा और दूसरा तीर उनकी गर्दन में लगा। तीर लगने से रानी कुछ समय के लिय अचेत हो गई। जब पुनः रानी को होश आया तब मुगल सेना हावी हो चुकी थी। रानी के सेनापतियों ने उन्हें युद्ध का मैदान छोड़कर सुरक्षित स्थान पर जाने की सलाह दी परन्तु रानी ने इस सलाह को दरकिनार कर दिया। अपने आप को चारो तरफ से घिरता देख रानी ने अपने शरीर को शत्रुओं के हाँथ ना लगने देने की सौगंध खाते हुए अपने मान–साम्मान की रक्षा हेतु अपनी तलवार निकाली और स्वयं तलवार घोपकर अपना बलिदान दे दिया और इतिहास में वीराँगना रानी सदा–सदा के लिये अमर हो गई। जिस दिन रानी ने अपना बलिदान दिया था वह दिन 24 जून 1564 ईसवी था। अब प्रतिवर्ष 24 जून को बलिदान दिवस (शौर्य–दिवस) के रूप में मनाया जाता है और रानी दुर्गावती को स्मरण किया जाता है। महारानी गोंडवंश की रानी सदैव अमर रहेगी एवं सम्पूर्ण गोंडवांना साम्राज्य में ऐतिहासिक तौर पर सदैव–सदैव जीवित रहेगी।

महारानी दुर्गावती के बलिदान के बाद उनका राज्य

रानी दुर्गावती के बलिदान के बाद कुंवर वीर नारायण चौरागढ़ में मुगलों से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। अब सम्पूर्ण गोंडवाना पर मुगलों का अधिपत्य हो गया। कुछ समय पश्चात् राजा संग्राम शाह के छोटे पुत्र (रानी दुर्गावती के देवर) और चांदा गढ के राजा चन्द्र शाह को अकबर ने अपने अधीन गोंडवाना का राजा घोषित किया और बदले में अकबर ने गोंडवाना के 10 गढ़ लिये।

महारानी दुर्गावती की समाधि (Rani Durgavati Samadhi)

वर्तमान में जबलपुर जिले में जबलपुर और मंडला रोड स्थित बरेला के पास नरई नाला वह स्थान के पास बरेला में रानी दुर्गावती का समाधि स्थल है। प्रतिवर्ष 24 जून को महारानी दुर्गावती के बलिदान दिवस पर गोंडवाना सगा समाज एवं मध्यप्रदेश शासन इस स्थान पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

महारानी दुर्गावती की समाधि (In Honer of Rani Durgavati)

महारानी दुर्गावती के सम्मान में 1988 में जबलपुर विश्वविद्यालय का नाम बदलकर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय कर दिया गया।

भारत शासन द्वारा 24 जून 1988 रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस पर एक डाक टिकट जारी कर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय कर दिया गया।

मंडला जिले के शासकीय महाविद्यालय का नाम भी रानी दुर्गावती के नाम पर ही रखा गया है। इसी प्रकार कई जिलों में रानी दुर्गावती की प्रतिमाएँ लगाई गई हैं और कई शासकीय इमारतों का नाम भी रानी दुर्गावती के नाम पर रखा गया है।

धन्य हैं वीराँगना महारानी दुर्गावती जिन्होंने अपने स्वाभिमान और देश की रक्षा के लिये अपना बलिदान दिया। ऐतिहासिक लेख के माध्यम से हम सगा समाज वीरांगना (गोंडवंश) की महारानी दुर्गावति की वीर साहस योद्धा (कुशल प्रशासिक) कर्मठ एवं संघर्ष शील समस्त मात्रशक्तियों का प्रेरणामयी "माता" देवी, दाई को सादर शत–शत अश्रुपूरित श्रद्धा सुमन करते है हम अर्पित।

"साहस एवं बलिदान कोटिश शत–शत नमन–नमन–नमन"
"फूल नहीं चिंगारी थी ये,
गोंडवंश की महारानी।
आग नही शोला थी,
भड़की तो इक ज्वाला थी।
"सादर धन्यवाद– सेवा जोहार– जय मात्रशक्तियों "
(मध्यप्रदेश–मध्यभारत)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. इन्टरनेट विकिपीडिया भारत (मध्यप्रदेश) 2021
2. डॉ. सुरेश मिश्र–मध्यप्रदेश के गोंड राज्य 2000
3. मण्डला डिस्ट्रीक्ट गजेटियर 1912
4. स्टीफेन फुश दि गोण्ड एण्ड भूमियाज ऑफ इस्टर्न मण्डला (1968)
5. अकबरनामा